# Psa

## Chapter 74

### Urdu Interlinear

Reference: Urdu Geo Version

| 1 | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | מַשְׂכִּיל | לְאָסָף | לָמָה | אֱלֹהִים | זָנַחְתָּ | לָנֶצַח | יֶעְשַׁן | אַפְּךָ | בְּצֹאן | מַרְעִיתֶךָ׃ |
| | تعلیمی | لِ-آصف | کیوں | خدا | تُو-نے-ترک-دیا | لِ-ہمیشہ | دھوئیں-دیتا-ہے | تیرا-غضب | بِ-بھیڑ | تیری-چراگاہ-کی |
| | H4905 | H0623 | H4100 | H0430 | | H5331 | H6225 | H0639 | H6629 | H4830 |

> آسف کا زبور۔ حکمت کا گیت۔ اے اللہ، تُو نے ہمیں ہمیشہ کے لئے کیوں رد کیا ہے؟ اپنی چراگاہ کی بھیڑوں پر تیرا قہر کیوں بھڑکتا رہتا ہے؟

| 2 | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | זְכֹר | עֲדָתְךָ | קָּנִיתָ | קֶּדֶם | גָּאַלְתָּ | שֵׁבֶט | נַחֲלָתֶךָ | הַר־ | צִיּוֹן | זֶה | שָׁכַנְתָּ | בּוֹ׃ |
| | یاد-کر | اپنی-جماعت-کو | تُو-نے-خریدا | قدیم-سے | تُو-نے-چھڑایا | قبیلہ | اپنی-میراث-کا | پہاڑ | صیون-کا | یہ | تُو-نے-سکونت-کی | بِ-اُس-میں |
| | H2142 | H5712 | H7069 | | | H7626 | H5159 | H2022 | H6726 | H2088 | H7931 | |

> اپنی جماعت کو یاد کر جسے تُو نے قدیم زمانے میں خریدا اور عوضانہ دے کر چھڑایا تاکہ تیری میراث کا قبیلہ ہو۔ کوہِ صیون کو یاد کر جس پر تُو سکونت پذیر رہا ہے۔

| 3 | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | הָרִימָה | פְעָמֶיךָ | לְמַשֻּׁאוֹת | נֶצַח | כָּל־ | הֵרַע | אוֹיֵב | בַּקֹּדֶשׁ׃ |
| | اٹھا | اپنے-قدم | لِ-ویرانیوں | ابدی-کی | سارے | برائی-کی | دشمن-نے | بِ-ہَ-پاکیزگی-میں |
| | | H6471 | H4876 | H5331 | H3605 | | H0341 | H6944 |

> اپنے قدم اِن دائمی کھنڈرات کی طرف بڑھا۔ دشمن نے مقدِس میں سب کچھ تباہ کر دیا ہے۔

| 4 | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | שָׁאֲגוּ | צֹרְרֶיךָ | בְּקֶרֶב | מוֹעֲדֶךָ | שָׂמוּ | אוֹתֹתָם | אֹתוֹת׃ |
| | گرجے | تیرے-دشمن | بیچ-میں | تیرے-مقدس-کے | اُنہوں-نے-رکھے | اپنے-نشان | لِ-نشانوں-کو |
| | H7580 | | H7130 | H4150 | | H0226 | H0226 |

> تیرے مخالفوں نے گرجتے ہوئے تیری جلسہ گاہ میں اپنے نشان گاڑ دیئے ہیں۔

| 5 | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | יִוָּדַע | כְּמֵבִיא | לְמָעְלָה | בִּסֲבָךְ־ | עֵץ | קַרְדֻּמּוֹת׃ |
| | وہ-جانا-جاتا-ہے | کَ-لانے-والے | لِ-اوپر | بِ-جھاڑی | درختوں-کی | کلہاڑیاں |
| | H3045 | H0935 | H4605 | H5442 | H6086 | H7134 |

> اُنہوں نے گنجان جنگل میں لکڑہاروں کی طرح اپنے کلہاڑے چلائے،

| 6 | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | [ועת] | (וְעַתָּה) | פִּתּוּחֶיהָ | יָּחַד | בְּכַשִּׁיל | וְכֵילַפֹּת | יַהֲלֹמוּן׃ |
| | [وَ-اب] | (وَ-اب) | اُس-کی-نقاشیوں-کو | اکٹھے | بِ-کلہاڑی | وَ-ہتھوڑوں-سے | وہ-توڑتے-ہیں |
| | H6256 | H6258 | H6603 | | H3781 | H3597 | H1986 |

> اپنے کلہاڑوں اور کدالوں سے اُس کی تمام کندہ کاری کو ٹکڑے ٹکڑے کر دیا ہے۔

| 7 | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | שִׁלְחוּ | בָאֵשׁ | מִקְדָּשֶׁךָ | לָאָרֶץ | חִלְּלוּ | מִשְׁכַּן־ | שְׁמֶךָ׃ |
| | اُنہوں-نے-جلایا | بِ-ہَ-آگ-سے | تیرے-مقدس-کو | لِ-ہَ-زمین-تک | اُنہوں-نے-پلید-کیا | مسکن | تیرے-نام-کی |
| | H7971 | H0784 | H4720 | H0776 | | H4908 | H8034 |

> اُنہوں نے تیرے مقدِس کو بھسم کر دیا، فرش تک تیرے نام کی سکونت گاہ کی بےحرمتی کی ہے۔

8
אָמְרוּ | اُنہوں-نے-کہا | H0559
בְלִבָּם | بِ-اپنے-دل-میں
נִינָם | ہم-اُنہیں-فنا-کریں-گے | H3238
יָחַד | اکٹھے
שָׂרְפוּ | اُنہوں-نے-جلایا | H8313
כָל־ | سب | H3605
מוֹעֲדֵי־ | مجمع | H4150
אֵל | خدا-کے | H0410
בָּאָרֶץ׃ | بِ-ہَ-زمین-میں | H0776

ہے.دی کر آتش نذرِ گاہ عبادت ہر کی اللہ میں ملک نے اُنہوں ملائیں!□ میں خاک کو سب اُن ہم □آؤ، بولے، وہ میں دل اپنے

9
אוֹתֹתֵינוּ | ہمارے-نشان | H0226
לֹא | نہیں | H3808
רָאִינוּ | ہم-دیکھتے-ہیں | H7200
אֵין־ | نہیں | H0369
עוֹד | ابھی | H5750
נָבִיא | نبی | H5030
וְלֹא־ | وَ-نہیں | H3808
אִתָּנוּ | ہمارے-ساتھ | H0854
יֹדֵעַ | جاننے-والا | H3045
עַד־ | عَد | H5704
מָה׃ | کب-تک | H4100

گے.رہیں تک کب حالات ایسے کہ ہو جانتا جو ہے موجود اَور کوئی نہ گیا، رہ پاس ہمارے نبی کوئی نہ ہوتا۔ نہیں ظاہر نشان الٰہی کوئی پر ہم اب

10
עַד־ | عَد | H5704
מָתַי | کب-تک | H4970
אֱלֹהִים | خدا | H0430
יְחָרֶף | رسوا-کرتا-رہے-گا
צָר | دشمن
יְנָאֵץ | توہین-کرے-گا | H5006
אוֹיֵב | دشمن | H0341
שִׁמְךָ | تیرے-نام-کی | H8034
לָנֶצַח׃ | لِ-ہمیشہ | H5331

گا؟کرے تکفیر کی نام تیرے تک کب دشمن گا، کرے طعن لعن تک کب حریف اللہ، اے

11
לָמָּה | کیوں | H4100
תָשִׁיב | تُو-واپس-لیتا-ہے | H7725
יָדְךָ | اپنا-ہاتھ | H3027
וִימִינֶךָ | وَ-اپنا-داہنا | H3225
מִקֶּרֶב | مِن-بیچ | H7130
]חוקך[ | ]اپنے-جیب-سے[ | H2706
)חֵיקְךָ( | )اپنی-گود-سے( | H2436
כַלֵּה׃ | ختم-کر | H3615

دے!کر تباہ اُنہیں کر نکال سے چادر اپنی اُسے ہے؟ رکھتا کیوں دُور ہاتھ دہنا اپنا ہٹاتا، کیوں ہاتھ اپنا تُو

12
וֵאלֹהִים | وَ-خدا | H0430
מַלְכִּי | میرا-بادشاہ | H4428
מִקֶּדֶם | مِن-قدیم-سے
פֹּעֵל | کرنے-والا | H6466
יְשׁוּעוֹת | نجاتیں | H3444
בְּקֶרֶב | بیچ-میں | H7130
הָאָרֶץ׃ | ہَ-زمین-کے | H0776

ہے.دیتا انجام کام بخش نجات میں دنیا وہی ہے، بادشاہ میرا سے زمانے قدیم اللہ

13
אַתָּה | تُو
פוֹרַרְתָּ | تُو-نے-چیرا
בְעָזְּךָ | بِ-اپنی-قوت-سے | H5797
יָם | سمندر-کو | H3220
שִׁבַּרְתָּ | تُو-نے-توڑے | H7665
רָאשֵׁי | سروں
תַנִּינִים | سانپوں-کے
עַל־ | پر
הַמָּיִם׃ | ہَ-پانیوں-پر | H4325

ڈالا.توڑ کو سروں کے اژدہاؤں میں پانی کر چیر کو سمندر سے قدرت اپنی نے ہی تُو

14
אַתָּה | تُو
רִצַּצְתָּ | تُو-نے-کچلے | H7533
רָאשֵׁי | سروں-کو
לִוְיָתָן | لویتان-کے | H3882
תִּתְּנֶנּוּ | تُو-نے-دیا-اُسے | H5414
מַאֲכָל | لِ-خوراک | H3978
לְעָם | لِ-قوم-کو
לְצִיִּים׃ | لِ-صحرائیوں-کو | H6728

دیا.کھلا کو جانوروں جنگلی اُسے کر چُور چُور کو سروں کے لویاتان نے ہی تُو

15
אַתָּה | تُو
בָקַעְתָּ | تُو-نے-چیرا | H1234
מַעְיָן | چشمہ | H4599
וָנָחַל | وَ-نالا
אַתָּה | تُو
הוֹבַשְׁתָּ | تُو-نے-خشک-کیا | H3001
נַהֲרוֹת | دریاؤں-کو | H5104
אֵיתָן׃ | کبھی-نہ-ختم-ہونے-والے | H0386

دیئے.سوکھنے دریا والے سوکھنے نہ کبھی جگہ دوسری دیں، پھوٹنے ندیاں اور چشمے نے تُو جگہ ایک

16
לְךָ | لِ-تیرا
יוֹם | دن | H3117
אַף־ | بھی | H0637
לְךָ | لِ-تیرا
לָיְלָה | رات | H3915
אַתָּה | تُو
הֲכִינוֹתָ | تُو-نے-قائم-کیا
מָאוֹר | روشنی | H3974
וָשָׁמֶשׁ׃ | وَ-سورج | H8121

ہوئے.قائم سے ہاتھ ہی تیرے سورج اور چاند ہے۔ ہی تیری بھی رات ہے، تیرا بھی دن

17

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַתָּה | הִצַּבְתָּ | כָּל־ | גְּבוּלוֹת | אָרֶץ | קַיִץ | וָחֹרֶף | אַתָּה | יְצַרְתָּם׃ |
| تُو | تُو-نے-مقرر-کیا | ساری | حدوں | زمین-کی | گرمی | وَ-سردی | تُو | تُو-نے-بنایا-اُنہیں |
| | H5324 | H3605 | H1367 | H0776 | H7019 | H2779 | | H3335 |

> بنائے.موسم کے سردیوں اور گرمیوں نے ہی تُو کیں، مقرر حدود کی زمین نے ہی تُو

18

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| זְכָר־ | זֹאת | אוֹיֵב | חֵרֵף | יְהוָה | וְעַם | נָבָל | נִאֲצוּ | שְׁמֶךָ׃ |
| یاد-کر | یہ | دشمن-نے | رسوا-کیا | یہوواہ-کو | وَ-قوم | بے-وقوف-نے | توہین-کی | تیرے-نام-کی |
| H2142 | H2063 | H0341 | | H3068 | | H5036 | H5006 | H8034 |

> بے.بکتی کفر پر نام تیرے قوم احمق کہ کر خیال کر. یاد طعن لعن کی دشمن رب، اے

19

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַל־ | תִּתֵּן | לְחַיַּת | נֶפֶשׁ | תּוֹרֶךָ | חַיַּת | עֲנִיֶּיךָ | אַל־ | תִּשְׁכַּח | לָנֶצַח׃ |
| مت | دے | لِ-جانوروں-کو | جان | اپنی-قمری-کی | جان | اپنے-غریبوں-کی | مت | بھول | لِ-ہمیشہ |
| H0408 | H5414 | | H5315 | H8449 | | H6041 | H0408 | H7911 | H5331 |

> بھول.نہ کو زندگی کی زدوں مصیبت اپنے تک ہمیشہ کر، نہ حوالے کے جانوروں وحشی کو جان کی کبوتر اپنے

20

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| הַבֵּט | לַבְּרִית | כִּי | מָלְאוּ | מַחֲשַׁכֵּי־ | אֶרֶץ | נְאוֹת | חָמָס׃ |
| دیکھ | لِ-ہ-عہد | کیونکہ | بھر-گئے-ہیں | اندھیرے-مقام | زمین-کے | بستیوں-سے | ظلم |
| H5027 | H1285 | | H4390 | H4285 | H0776 | H4999 | H2555 |

> ہیں.گئے بھر سے میدانوں کے ظلم کونے تاریک کے ملک کیونکہ کر، لحاظ کا عہد اپنے

21

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַל־ | יָשֹׁב | דַּךְ | נִכְלָם | עָנִי | וְאֶבְיוֹן | יְהַלְלוּ | שְׁמֶךָ׃ |
| مت | پھرے | مظلوم | شرمندہ-ہو-کر | غریب | وَ-محتاج | حمد-کریں | تیرے-نام-کی |
| H0408 | H7725 | H1790 | H3637 | H6041 | H0034 | | H8034 |

> سکیں.کر فخر پر نام تیرے غریب اور زدہ مصیبت کہ دے بخش بلکہ پڑے ہٹنا پیچھے کر ہو شرمندہ کو مظلوموں کہ دے نہ ہونے

22

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| קוּמָה | אֱלֹהִים | רִיבָה | רִיבֶךָ | זְכֹר | חֶרְפָּתְךָ | מִנִּי־ | נָבָל | כָּל־ | הַיּוֹם׃ |
| اٹھ | خدا | مقدمہ-لڑ | اپنا-مقدمہ | یاد-کر | اپنی-رسوائی | مِن-بے-وقوف | سے | سارا | ہَ-دن |
| | H0430 | H7378 | H7379 | H2142 | H2781 | | H5036 | H3605 | H3117 |

> بے.کرتا طعن لعن تجھے بھر دن احمق کہ رہے یاد کر. دفاع کا معاملے اپنے میں عدالت کر اُٹھ اللہ، اے

23

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַל־ | תִּשְׁכַּח | קוֹל | צֹרְרֶיךָ | שְׁאוֹן | קָמֶיךָ | עֹלֶה | תָמִיד׃ |
| مت | بھول | آواز | تیرے-دشمنوں-کی | شور | اٹھنے-والوں-کا-تیرے-خلاف | چڑھتا-ہے | ہمیشہ |
| H0408 | H7911 | | | H7588 | | H5927 | H8548 |

> کر.یاد شرابہ شور ہوا بڑھتا مسلسل کا مخالفوں اپنے بلکہ بھول نہ نعرے کے دشمنوں اپنے